विचार बिन्दु

कलियुग में रहना है या सतयुग में यह तुम स्वयं चुनो, तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। –विनोबा

नई सरकारों को शुभकामनाएं!

एक लम्बे चुनाव अभियान के बाद 25 नवंबर को हमने अपने मताधिकार का प्रयोग कर लिया और आज जब आप अपने अखबार में मेरा यह अतिथि संपादकीय पढ रहे होंगे तो इसी अखबार में यह समाचार भी प्रमुखता से छपा हुआ होगा कि राजस्थान सहित पांच राज्यों में अगले पांच बरस किस दल की सरकार जनता की सेवा करेगी। क्योंकि मणिपुर में मतगणना अन्य राज्यों से एक दिन बाद को होगी, वहां के बारे में स्थिति दोपहर तक साफ़ हो सकेगी। चुनाव अभियान के दौरान सभी राजनीतिक दलों ने हमें अर्थात आम मतदाता को यह एहसास कराया कि हम बहुत महत्वपूर्ण हैं और वे हमारे लिए सब कुछ करने को लालायित हैं। वैसे यह एहसास कराने के तौर तरीकों में काफी बदलाव आया है। मुझे तीन-चार दशक पहले का वह ज़माना भी याद है जब उम्मीदवार गली-गली, घर-घर आकर हाथ जोड़कर वोट की याचना करते थे। अब, कम से कम शहरों में प्राय: ऐसा नहीं होता। अधिक से अधिक यह होता है कि पहले चुनाव लड़ रहे नेताजी के समर्थक आकर हमें चेताते हैं कि नेताजी पधारने वाले हैं हम उनका स्वागत करने को तैयार रहें। प्राय: वे मालाएं भी हमें दे जाते हैं जो हम अपने घर के दरवाज़े पर पधारे हुए नेताजी को पहनाएंगे। थोड़ा या बहुत इंतज़ार करवाने के बाद नेताजी पधारते हैं, हम उन्हीं के कार्यकर्ताओं/समर्थकों द्वारा उपलब्ध कराई गई माला उन्हें पहना कर उनका स्वागत-अभिनंदन करते हैं और नेताजी अगले द्वार की तरफ बढ़ जाते हैं। हम धन्य हो जाते हैं। अगर सम्भव होता है तो किसी को कहकर इस ऐतिहासिक क्षण की एक फोटो भी खिंचवा लेते हैं और उस फोटो को तुरंत किसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट भी कर देते हैं! हम धन्य हुए हैं तो दुनिया को पता भी तो चलना चाहिए! यह भला कौन सोचता है कि नेताजी वोट मांगने आए थे या अपना स्वागत करवाने! हमारे संतोष के लिए तो यही पर्याप्त है कि नेताजी हमारी गली में, हमारे दरवाज़े पर पधारे। अब पूरे पांच साल तो हमीं उनके दरवाज़े पर जाकर नाक रगड़ेंगे। चुनाव प्रचार पहले से बहुत अधिक भव्य और खर्चीला हो गया है। रैलियां और रोड शो शक्ति के साथ-साथ वैभव के प्रदर्शन का भी माध्यम बन गए हैं। इस बार के चुनाव में सबसे ज़्यादा अखरने वाली बात रही भाषिक शालीनता की विदाई। लगभग सभी दलों के प्रत्याशियों ने खराब भाषा और अशालीन अभिव्यक्तियों के मामले में जम कर प्रतिस्पर्धा की और हमारे लिए यह तय करना कठिन रहा कि इस प्रतिस्पर्धा में कौन अव्वल रहा! जहां तक वास्तविक प्रचार की बात है, कम से कम मैं तो यह समझ पाने में असमर्थ रहा, या विभिन्न दलों के प्रत्याशी मुझे समझाने में असमर्थ रहे कि मैं किसी को क्यों वोट दूं, या किसी को क्यों वोट न दूं! किसी के पास कोई एजेण्डा नहीं था। निश्चय ही सत्तारूढ दल के पास बताने को इतना तो था कि उसने बीते कुछ समय में क्या-क्या काम किए, लेकिन भविष्य का कोई स्पष्ट और विश्वसनीय रोड मैप उसके पास भी नहीं था, और न ही दूसरे पक्षों के पास ऐसा कुछ था। दूसरे पक्षों को तो एक ही काम करना था – वर्तमान सत्तारूढ दल की जम कर लानत-मलामत करना, और यह काम उन्होंने पूरी ताकत से किया। उनके लिए ऐसा करने का मौका भी था, दस्तूर भी। लेकिन अगर किसी ने यह जानने का प्रयास किया कि अगर वे सत्ता पर कबिज़ हो जाएंगे, तो क्या-क्या करेंगे, यह जानना कठिन ही रहा।

चुनाव प्रचार के दौरान मीडिया की भूमिका भी वैसी नहीं रही, जैसी रह सकती थी। पिछले कुछ बरसों में मुझे यह महसूस होने लगा है कि मीडिया पर सत्ता का शिकंजा कसता जा रहा है और वह जो तुमको हो पसंद वही बात कहेंगेवाले मोड में आ चुका है। जिस मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहकर सराहा जाता है और जिससे यह उम्मीद की जाती है कि वह बिना लाग-लपेट के खरी-खरी कहेगा, उसने अब अपनी भूमिका बदल ली है। अगर आप पिछले लगभग एक महीने के अखबारों को खंगालें तो पाएंगे कि उनमें सत्ता पक्ष की बात को ज़रूरत से ज़्यादा स्पेस मिली है। कहना अनावश्यक है कि सत्ता पक्ष में केंद्र की सत्ता और राज्य की सत्ता दोनों ही शामिल हैं। अगर कुछ अखबारों ने, अलग-अलग कारणों से वर्तमान सत्ता के प्रति आलोचनात्मक रवैया भी अख़्तियार किया तो उन्होंने प्राय: अपनी भूमिका को दूसरे पक्ष की प्रेस विज्ञिप्तयों को अधिक स्थान देने से आगे नहीं बढ़ाया। कुछ दलों के मीडिया प्रभाग ने वाकई अपने सक्रिय होने के भरपूर प्रमाण दिये और कुछ दलों के, भले ही वे कितने भी बडे क्यों न हो, मीडिया प्रभाग ने अपनी काहिली का परिचय देने में भी कोई कसर नहीं छोडी। अखबारों ने अपने-अपने चुने हुए पक्षों का महिमामण्डन और दूसरे पक्ष का ध्वस्तीकरण करने में इस बात की भी परवाह नहीं की कि ऐसा करके वे स्वयं अपनी छवि को भी धूमिल कर रहे हैं। इस दौरान अखबारों को पढते हुए प्राय: यह भ्रम हुआ कि उनका प्रकाशन किसी दल विशेष द्वारा किया जा गया है। और ऐसा ही हुआ एक्जिट पोल्स के मामले में भी। उन्हें देखकर लगा कि यह पहले से तय कर लिया गया है कि किसे जिताना और किसे हराना है। यह तय कर लेने के बाद खाली जगहों में आंकड़े भर दिये गए।

अब जबकि चुनाव परिणाम आ चुके हैं और हम सब यह जान चुके हैं कि ऊंट किस करवट बैठा है, अब यह उपयुक्त होगा कि चुनाव प्रचार के दौरान विभिन्न प्रत्याशियों और दलों द्वारा एक दूसरे के खिलाफ़ जो भी कहा गया, उसे भुला दिया जाए और जिस दल की सरकार बने उसे अन्य सभी पूरा सहयोग दें ताकि वह भली भांति अपना काम कर सके।

अब जबकि चुनाव परिणाम आ चुके हैं और हम सब यह जान चुके हैं कि ऊंट किस करवट बैठा है, अब यह उपयुक्त होगा कि चुनाव प्रचार के दौरान विभिन्न प्रत्याशियों और दलों द्वारा एक दूसरे के खिलाफ़ जो भी कहा गया, उसे भुला दिया जाए और जिस दल की सरकार बने उसे अन्य सभी पूरा सहयोग दें ताकि वह भली भांति अपना काम कर सके। विजेता पक्ष पर भी यह दायित्व है कि वह प्रतिपक्ष को पूरा सम्मान दे और उसकी बातों को सद्भावना के साथ सुने। चुनाव के समय एक दूसरे का विरोध समझ में आता है, लेकिन चुनाव हो जाने के बाद सबको मिल-जुलकर एकजुट होकर अपने प्रदेश के हित में काम करने में कृपणता नहीं बरतनी चाहिए। प्रदेश के विकास का दायित्व सभी का साझा दायित्व है। नई सरकार का यह भी दायित्व है कि वह चुनाव के दौरान उत्पन्न हुई कटुता को तुरंत विस्मृत कर दे और सबको साथ लेकर चले। इन सब में उसके अपने दल के सभी लोग भी शामिल हैं।

हम पिछले कुछ समय से देखते रहे हैं कि चुनाव हो जाने और सरकार बन जाने के बाद काफी समय तक विजेताओं और विशेष रूप से सरकार का हिस्सा बने जन प्रतिनिधियों के स्वागत सत्कार का सिलसिला चलता रहता है। इस सिलसिले को संक्षिप्त किया जाना ज़रूरी है। और यह प्रयास समर्थकों या अनुयाइयों द्वारा नहीं स्वयं विजेता और नव सत्तासीनों द्वारा ही हो सकता है। आप अपना स्वागत करवाने में जितना समय नष्ट कर रहे हैं उतने समय में कोई जन कल्याणकारी काम करें तो आपके समर्थकों और मतदाताओं को भी महसूस होगा कि उन्होंने अपने मत का सही प्रयोग किया है। हम हर चुनाव के बाद देखते हैं कि सत्ता में आए लोग इस आशय की घोषणा करते हैं कि वे वीआईपी संस्कृति को खत्म कर देंगे, शुरू-शुरू में दो-चार बार वे ऐसा करते भी हैं लेकिन फिर वे ख़ुद भूल जाते हैं कि उन्होंने क्या कहा था, और जैसे वीआईपी बने रहने में उन्हें खुद आनंद मिलने लगता है। मैं चाहूंगा कि अगर उनका इरादा वास्तव में इस व्यवस्था को छेडने का नहीं है तो कृपा करके इसे ख़त्म करने की मिथ्या घोषणा भी न करें। जनता का क्या है? उसे तो आदत है वीआईपी मूवमेण्ट के नाम पर असुविधाएं सहने की। पहले भी सह रही थी, आगे भी सहती रहेगी। कम से कम आप तो जनता की निगाहों में झूठे न बनें।

इसी तरह नए बने मंत्री अपने विभाग के कुछ कार्यालयों का दौरा करते हैं, औचक निरीक्षण करते हैं और यह सब अखबारों की सुर्खियों में आता है, लेकिन चार छह माह बीतते-बीतते मंत्री जी 'अन्य' कामों में इतने अधिक व्यस्त हो जाते हैं कि विभागीय कार्यालयों के निरीक्षण के लिए उनके पास कोई समय नहीं बचता है। मुझे याद नहीं आता कि सत्ता के दूसरे तीसरे बरस में किसी मंत्री ने अपने विभागीय कार्यालय का औचक निरीक्षण करने का कष्ट किया हो। अगर आप नियमित रूप से ऐसा नहीं कर सकते हैं, तो इसे शुरू भी न करें। माननीय विधायक गण अगर आगामी वर्षों में अपने मतदाताओं से जीवंत सम्पर्क बनाए रखेंगे तो इसका लाभ उन्हें अगले चुनाव में भी मिलेगा।

अंतिम बात मैं आम जन से, अर्थात अपने आप से कहना चाहता हूं। हमने जिन्हें चुना है, बेशक उनका सम्मान हमें करना चाहिए। लेकिन यह सम्मान करते हुए हमें उन्हें भगवान नहीं बना देना है। बशीर बद्र ने क्या खूब कहा है सर झुकाओगे तो पत्थर देवता हो जाएगा/ इतना मत चाहो उसे वो बेवफ़ा हो जाएगा। यह बात हमें भी याद रखनी है और उन्हें भी याद दिलाते रहना है कि वे अंतत: हमारे लिए हैं, हमारी बेहतरी के लिए हैं। अगर वे हमारी अपेक्षाएं पूरी न करें तो उन्हें टोकने का भी हमें हक़ है। असल में ऐसा नहीं है कि चुनाव के बाद नेता ही जनता को भूल जाते हैं, सच तो यह है कि वोट देने के बाद हम भी भूल जाते हैं कि हमने किसी को चुना था।

आइये, कामना करें कि अब ऐसा नहीं होगा। नई सरकार को अनंत शुभ कामनाएं!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्यों के समूह के साथ अपनी पहचान बनाता है

महावीर सिंह

जाति भारतीय समाज की हकीकत है। अधिकांश भारतीय धर्म शास्त्रों में किसी न किसी प्रकार से जातियों का विवरण है। विभिन्न जातियों के बीच सामाजिक व्यवहार कैसा है, कैसा हो इसके भी उल्लेख मिल जाएंगे। बहुत सी जातियों के देवता धर्मस्थल भी अलग अलग मिल जाते है। भारत में जाति तो व्यक्ति के मरने के बाद भी उसका पीछा नहीं छोड़ती,श्मसान भी जातियों के अनुसार।

जाति व्यक्ति की एक बड़ी पहचान है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते, मनुष्यों के समूह के साथ अपनी पहचान बनाता है। उसकी सबसे पहली इडेन्टिटी उसके माता-पिता, बाद में परिवार, फिर गांव-शहर-देश-प्रदेश, से बनती है। धर्म, भाषा दूसरी बड़ी पहचान है। इनके अलावा एक जैसे प्रोफेसन्स-सेवा-समाज चेतना-सेवा कार्यों वाले ग्रुप्स, राजनीतिक विचारधाराओं पर आधारित ग्रुप्स व अन्य ऐसी ही समूह भी इडेन्टिटी का बड़ा आधार है। कुल मिलाकर, जाति भारतीय समाज में एक बड़ी इडेन्टिटी है जिसके आधार पर समाजों के लोग इक्कठे होकर अपने समाज से सम्बंधित विभिन्न बातों-समस्याओं-उप्लब्धदियों पर विचार करते हैं। भारतीय समाज में रीतिरिवाज, परिपाटियां, घोर अशिक्षा, अंधविश्वास, कुरीतियां, जाति आधारित पूर्वाग्रहों-दुराग्रहों के फैलने-फैलाने के अनेक धार्मिक, इतिहास से जुड़े कारण रहे है। इसी प्रकार बहुत से जातीय समूहों की सरकारों से कुछ अपेक्षाएं, मांगे होती है ।

यदि विभिन्न समाजों के लोग एकत्र होकर इन सब मुद्दों पर समय की मांग के अनुसार विचार कर, निर्णय करते है तो यह उन संगठनों की सार्थकता है और समाज के आव्हान पर लोग विभिन्न प्रतिगामी रीतिरिवाजों, अन्ध विश्वसों, जाति आधारित पूर्वाग्रहों-दुराग्रहों से दूर होते है तो यह उनके सामर्थ्य-प्रसांगिकता के प्रमाण होंगे।

उदाहरणार्थ समाज के लिए डाईन प्रथा, झाड़ फूंक से इलाज का अंधविश्वास-झोलाछाप डॉक्टरों से इलाज करवाना, तीव्र गति से फैलता तरह तरह के नशों का नाशूर, गैंगस्टरस को रोल मॉडल मान कर घृणित वारदातों की ओर आकर्षित होते युवा, दहेज प्रथा व उस से होने वाली मोतें या इस सम्बंध में लगने वाले झूठे आरोप, बाल विवाह कुप्रथा, मृत्युभोज के नाम पर दशो दिन बहुत बड़ी संख्या में लोगों को भोजन करवाना, शादी समरोह-जन्मोत्सव पर होने वाला अपव्यय, इस प्रकार के मसले हैं जिनमें सामूहिक सामाजिक निर्णय बहुत ही असरकारक हो सकते है बशर्ते इन संगठनों के कर्ताधर्ता स्वयं उदाहरण बनें।

दहेज के सम्बंध में जयपुर के पारीक समाज का एक बड़ा रोचक किस्सा है। 1699 में सांगानेर व आमेर के दो पारीक परिवारों हुई शादी में इतने धन का अपव्यय हुआ कि प्रबुद्ध नागरिकों नें यह निर्णय किया कि पारीक समाज में दहेज/पहरावणी में एक तय रकम से अधिक नहीं दिए जाएंगे। वर्तमानं में यह रकम 217 रु है। कुछ दूसरे समाज भी समय समय यह निर्णय करते है कि शादी में दहेज के नाम पर नारीयल व एक सौ रुपए दिए जाएं। विभिन्न समाज भी इसी प्रकार की कोई स्वस्थ परम्परा करें तो यह बहुत बड़ी बात होगी। यदि,जो समर्थ होता है वह दहेज का बड़ा दिखावा करता है तो उसके कम सामर्थ्यवान परिवार-कुन्बे वालों पर वैसा ही कुछ करने का मानसिक दबाव बनता है।ऐसा करने वालों की वितीय स्थिति खराब हो जाती है। विभिन्न जातियों की राज्य सरकार के निर्णयों से जुड़ी समस्याएं भी होती है। जाति उत्थान के लिए कुछ मांगे भी राज्य सरकार से सम्बंधित हो सकती है। उदाहरण के लिए लुहार, बढई, खाती, कुम्हार जतियों के पारम्परिक धंधों से जुड़े औजारों के उन्नयन की बात हो सकती है, बैंक ऋणों से सम्बंधित समस्या हो सकती है। इनके संगठन इस प्रकार की मांगें राज्य से कर सकते है।सरकार ही इस सम्बंध में कार्यवाही कर सकती है। किसान जातियों से जुड़े संगठन कृषि,पशुपालन से जुड़ी समस्याओं के समाधान की मांगें सरकार के समक्ष रख सकती है। उदहारण के लिए कृषि विविधीकरण के लिए प्रोत्साहन, कृषि उपजों के लिए लाभकारी मूल्य व उस पर क्रय की व्यवस्था, अन्य देशों से सब्सिडाइज्ड उत्पादों के सस्ते आयतों से किसानों की रक्षा, कम पानी की फसलों के लिए फार्म लेवल पर डिमोंस्टरेसन्स, विभिन्न अनुदान योजनाओं के ओर अधिक सरलीकरण, गलत नीतियों व कुछ संगठनों द्वारा की जाने वाली डराने-धमकाने जैसी कार्यवाहियों के चलते उत्पन्न आवारा पशुओं की समस्या, इन सब से से निजात इत्यादि।

विभिन्न राजकीय सेवाओं में विभिन्न वर्गों को आरक्षण देना केंद्र और राज्य सरकारों की नीतियां है। इनके अंतर्गत जारी आदेशों और उनके क्रियान्वयन से जुड़ी ग्रीवानसेज समय समय पर सामने आती रहती है। छोटे-बड़े आंदोलन भी होते रहते है। इन समस्याओं को इन संगठनों के माध्यम से सरकारों के सामने रखे जा सकती है।

सम्मेलन के समय संगठनों का दायित्व:-कुछ बड़ी जातियां,जब इस प्रकार के सम्मेलन करती है तो बड़ा जन समूह एक साथ होता है। इसलिए आयोजकों का दायित्व बनता है कि शहरियों का सामान्य यातायात, कानून व्यवस्था दुष्प्रभावित न हो। अत्यावश्यक कार्यों के लिए जाने वालों को परेशनियों का सामना न करना पड़े। इसके लिए समाज के बड़ी संख्या में वोलेंट्रीयस तैयार कर उन्हें इन सब व्यवस्थाओं के लिए ट्रेनिंग देकर तैनात किया जाए। बड़ी गेदरिंग्स सामने होने पर पोलिटीसियन्स उसका दुरुयोग करने के लालच का संवरण नहीं कर पाते। आयोजकों के लिए यह अत्यंत कठिन दायित्व बन जाता है कि ऐसा न हो पाए।असामाजिक तत्व भी विभिन्न प्रकार से ऐसे अवसरों का दुरुपयोग कर सकते हैं।आयोजकों के दायित्व होता है कि ऐसा न हो पाए।

नवाचार : हर समाज में विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले अत्यंत समान्नित लोग होते है। इन मंचों का अत्यंत सकारात्मक उपयोग होगा यदि ऐसे सहित्यकारों, कलाकारों, शिक्षकों, संगीतज्ञों, समाज सेवियों, प्रगतिशील कृषकों-कामगारों, अनेक लोगों को रोजगार देने वाले उद्यिमयों, व्यवसायियों, इत्यादि का सम्मान इन मंचों से किया जाए। पुछले कुछ समय से इस प्रकार के समाचार भी यदाकदा आते है जिसमें एक रुपया नातीयल में शादियां सम्पन्न हुई है। ऐसे जोड़ों को भी इन संगठनों के मंचों से सम्मानित किया जाना प्रशंसनीय होगा।इस से जातीय संगठनों की स्वीकार्यता बढेगी।

किसी भी संगठन की सबसे बड़ी ताकत उसकी सदस्यता प्रक्रिया, पदाधिकारीयों के चयन की पारदर्शी कार्य प्रणाली, नियमित बैठकें-विचार विमर्श व उधेयशयों की प्राप्ति के लिए सतत गतिविधियां होती है। ऐसे संगठन शिक्षा,स्वास्थ्य, समाज सुधार,विभिन्न लोगों को विभिन्न प्रकार से प्रोत्साहन देने के क्षेत्रों में ज्यादा व्यापक व लंबे समय तक,समाज की सर्व स्वीकार्यता के साथ समाज हित कार्य कर सकते है।

- महावीर सिंह
पूर्व आईएएस

ख्वाजा साहब का उर्स चांद दिखने पर 12 जनवरी को

अजमेर, (कासं)। ख्वाजा साहब के 812वें उर्स की शुरुआत चांद दिखाई देने पर 12 जनवरी की रात से हो सकती है। इस दिन सुबह जन्नती दरवाजा खोला जाएगा। उर्स का समापन 21 या 22 जनवरी को होगा। दरगाह कमेटी की ओर से जारी उर्स कार्यक्रम के अनुसार इस्लामी कैलंडर के जमादिल आखिरी महीने की 25 तारीख यानी 8 या 9 जनवरी को दरगाह के बुलंद दरवाजे पर झंडा चढ़ाया जाएगा। चांद की 29 तारीख को यानी 12 या 13 जनवरी को सुबह 4:30 बजे जन्नती दरवाजा खोला जाएगा। रजब महीने का चांद दिखाई देने पर महफिल ए समां और मजार शरीफ को गुसू देने का सिलसिला शुरू हो जाएगा। चांद नजर नहीं आने पर अगले दिन से ये रसुमात शुरू होंगी। 16 या 17 जनवरी को रात की अंतिम महफिल होगी और मजार शरीफ को गुसू दिया जाएगा।

प्रस्तावित कार्यक्रम में जानकारी दी गई है कि 18 या 19 जनवरी को 6 रजब के मौके पर कुल होगा। सुबह 11 बजे से महफिल खाना में कुल की महफिल शुरू होगी। दोपहर 1:15 बजे कुल की रस्म के साथ ही उर्स का समापन होगा। बड़ा कुल 21 या 22 जनवरी को होगा। उर्स के दौरान अकीदतमंद 12 व 19 जनवरी को जुमे की नमाज अदा करेंगे।

मतगणना केन्द्र के पास कार्यकर्ताओं पर पुलिस ने बल प्रयोग किया

- **भाजपा कार्यकर्ता और समर्थक जीते हुए प्रत्याशियों के लिए भीड़ में नारेबाजी कर रहे थे**

अजमेर, (कासं)। जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा मतगणना केन्द्र व आसपास के क्षेत्र समेत अजमेर जिले व शहर में जुलूस व डीजे बजाने सहित आतिशबाजी पर प्रतिबंध लगाते हुए धारा 144 लागू की गई लेकिन रविवार को अजमेर शहर में नसीराबाद रोड स्थित पर्बतपुरा चौराहे पर पॉलिटेक्निक कॉलेज के बाहर पुलिस ने भाजपा समर्थकों पर लाठीचार्ज कर दिया।

भाजपा कार्यकर्ता और समर्थक यहां पॉलिटेक्निक कॉलेज के बाहर जीते हुए प्रत्याशियों के लिए भीड़ में नारेबाजी कर रहे थे। पुलिस ने बेरिकेडिंग कर पहले तो भीड़ को रोकने का प्रयास किया, लेकिन भीड बेरिकेडिंग से निकल कर मतगणना केन्द्र की ओर बढ़ने लगी तो मामला बिगड़ता देख पुलिस को लाठियां चलानी पड़ी। गौरतलब है कि पॉलिटेक्निक कॉलेज को काउंटिंग सेंटर बनाया गया था। ऐसे में यहां भीड़ जुटती देख पुलिस को बल प्रयोग करना पड़ा।

मावठ से किसानों के चेहरे खिले, तापमान गिरने से धूजणी छूटी

- **करौली जिला मुख्यालय सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में कभी कम तो कभी तेज बारिश हुई**
- **हिण्डौन सिटी शहर सहित आसपास के क्षेत्र में बारीश से तापमान में 5 से 7 डिग्री की गिरावट**

गंगापुर सिटी में मावठ से सड़कों पर पानी भर गया।

गंगापुर सिटी/करौली/हिण्डौन सिटी, (निसं)। रविवार को सुबह से ही वर्षा शुरू होने के कारण फसलो को अमृत मिल गया जिससे किसानों के चेहरे खिल उठे। वहीं दिनभर बरसात व हवा के चलने से तापमान गिर गया जिससे लोगों को दिनभर धूजणी लगती रही वहीं लोगों ने अलाव का सहारा लेते गर्म कपड़ों में लिपटे दिखे। इसके साथ ही गजक-मूंगफली सहित चाट-पकोड़ी की दुकानों पर भीड़ देखी गई। बरसात व सर्दी के कारण जहां दिन में देरी बाजार खुले वहीं शाम को पांच बजे ही बाजार बंद हो गए। इसके साथ ही लोगों ने रविवार को चुनाव परिणामों की घोषणा का आनंद भी सर्दी की वजह से घरों पर लिया। दिनभर चली बरसात से गंगापुर शहर के बाजारों में कीचड हो गया वहीं नालियों की सफाई नहीं होने से गंदापानी सडको पर बह निकला।

करौली जिला मुख्यालय सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में रविवार को दिनभर कभी कम तो कभी तेज बारिश होती रही जिसके चलते सड़क पानी से जलमग्न हो गई। रविवार को मौसम ने अचानक पलटा खाया और प्रात: के समय सर्द हवाओं के बीच बूंदाबांदी का दौर शुरू हुआ। जिसके चलते कभी कम तो कभी तेज बारिश हुई। दिनभर आसमान में घने काले बादल छाए रहने से लोगों को सर्दी का एहसास हुआ और बाजारों में लोगों ने आलाप जलाकर सर्दी से बचाव किया वहीं मतगणना होने के कारण शहर के बाजार भी जल्दी बंद होने लग गए और लोगों ने अपने-अपने घरों पर पहुंचकर टीवी और मोबाइल के माध्यम से चुनाव परिणाम जाने।

हिंडौन में मावठ का दौर जारी, ठिठुरन बढ़ी किसान खुश : - हिण्डौन सिटी शहर सहित आसपास के क्षेत्र में रविवार दोपहर बाद शुरू हुआ जो देर रात तक जारी रहा इस दौरान तापमान में 5 से 7 डिग्री की गिरावट आ गई। जिससे ठिठुरन बढ़ गई तो वहीं रबी की फसल के लिए भारी फायदेमंद मानी जा रही मावट से किसान खुश नजर आ रहे हैं। उल्लेखनीय है कि गत लगभग एक सप्ताह से हिंडौन से आसपास के क्षेत्र में आसमान में कभी बदल घिरते तो कभी छट जाते यह दौर जारी रहा। इससे तापमान में थोड़ी गिरावट दर्ज जरूर हुई लेकिन मावट का इंतजार कर रहे किसान आसमान की ओर ताकते नजर आए। इसी बीच रविवार दोपहर चारों तरफ घने बादल घिर आए और बूंदाबांदी के साथ मावट का दौर शुरू हो गया। हालांकि बारिश की गति ज्यादा तेज नहीं थी। लेकिन रुक-रुक कर हुई बारिश का दौरा देर रात तक जारी रहा। जिससे शाम ढलने से पहले ही चारों तरफ अंधेरा छा गया। इस दौरान जहां पहले दिन का तापमान लगभग 20 से 25 डिग्री दर्ज किया जा रहा था, वही पारा 18 डिग्री पर जा गिरा जिससे मौसम में ठंडक बढ़ गई। लोग सर्दी से बचने के लिए अलाप का सहारा लेते हुए देखे गए तो वही शाम ढलने से पहले बाजार भी सुनसान नजर आए। हालांकि मौसम विभाग ने सुबह से ही क्षेत्र के 11 जिलों में अलर्ट जारी कर दिया था। जिसमें तेज गर्जना और हवा के साथ बारिश की संभावना जताई गई थी। मौसम विभाग का अनुमान सही निकला और मावट का दौर जारी रहा। इस तरह पानी की समस्या से जूझ रहे क्षेत्र के किसानों जो गत दिनों से बारिश की बाट जोह रहे थे उन्होंने राहत की सांस ली। क्षेत्र में पानी की बेहद कमी है जलस्तर ज्यादा गहरा होने के कारण पूरी कृषि बारिश पर निर्भर है। इस समय सरसों और गेहूं की फसल के लिए पानी की बेहद सख्त जरूरत मानी जा रही है। यह मावट इस फसल के लिए उर्वरक का काम करेगी। वहीं चना, तारामीरा आदि की फसल की बुवाई के लिए भी यह मावट बेहद फायदेमंद साबित होगी। जिससे किसानों के चेहरे खिले हुए हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 4 दिसम्बर, 2023

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, मघा नक्षत्र रात्रि 12:35 तक, वैधृति योग रात्रि 9:17 तक, विष्टि करण सांय 7:28 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-वृश्चिक, बुध-धनु, गुरू-मेष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

रवियोग रात्रि 12:35 तक है। भद्रा प्रात: 8:44 तक रहेगी। आज वैधृति पूण्य, खरतगच्छ (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:23 तक, शुभ 9:41 से 10:59 तक, चर 1:35 से 2:53 तक, लाभ-अमृत 2:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:04, सूर्यास्त 5:29

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृष

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित योजना बनेगी।

सिंह

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।